शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,

Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com/* https://doi.org/10.31995/shodhmanthan

ग्रामीण महिलाओं पर शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन

रितु गुलाठी
शोध छात्रा
समाजशास्त्र विभाग,
चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय,
मेरठ, उ0प0, भारत।
Email:

रश्मि
असि0 प्रोफे0
समाजशास्त्र विभाग,
विद्योतमा कन्या पी.जी. डिग्री कॉलिज,
खतौली, उ0प0, भारत।

सारांश

भारत सरकर ने महिलाओं के कल्याण के लिए न जाने कितनी योजनायें पिछले 25 वर्षों में संचालित रखी है जिनमें सैकड़ों करोड़ रूपये खर्च किये जाते हैं। लेकिन इन योजनाओं की जानकारी उन्हें शिक्षित होना जरूरी है। महिलाओं के बहुमुखी विकास के लिए महिलाओं का शिक्षित होना आवश्यक है। आज समाज में महिलायें तेजी से शिक्षा के क्षेत्र में अपने आपको स्थापित कर रही है हाल ही में विश्वविद्यालय के आंकडे दर्शाते हैं कि लड़कियों की शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उपस्थिति हुई है जिसके कारण समाज में जागरूकता का बढ़ना एवं परम्परावादी सोच का घटना दिखायी पड़ता है। प्रस्तुत लेख में महिलाओं की स्थिति पर शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

प्राचीन विश्व के परिदृश्य में अगर बात की जाए तो इस संसार में महिला को उच्च स्थान प्राप्त था तथा वह अपने घर एवं अपने छोटे–छोटे कबीले की मुखिया हुआ करती थी जिसका महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन ने अपनी रचना बोल्गा से गंगा में स्पष्ट उल्लेख किया गया है।

स्त्रियों की स्थितियां सदा एक सी नहीं रही जनसंख्या में वृद्धि एवं मनुष्य के स्थायी निवास ने महिला मुखिया का स्थान पुरूष को प्रदान कर दिया और अब पुरूष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने वाली सहभगिनी बन गयी मनुस्मृति में नारी के अर्द्धनारीश्वर रूप की कल्पना की गयी है।

प्राचीन काल की स्त्रियों में लोपामुद्रा एवं गार्गी जैसी विदुषी महिलाओं का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है, जिन्होंने अपने ज्ञान से न केवल पुरूष समाज को बल्कि तत्कालीन व्यवस्था को भी प्रभावित किया।

प्राचीन काल मध्यकाल एवं आधुनिक काल में स्त्रियों की समाजिक, आर्थिक स्थितियों में लगातार परिवर्तन आते गये हैं, मध्यकाल में जब स्त्रियों को अनेक सामाजिक बुराईयों जैसे जौहर व सती प्रथा से कड़े नियमों में बांधकर रख दिया वहीं भारत में मुस्लिम आगमन से स्त्रियों को न केवल घर की चाहरदीवारी में कैद कर दिया बल्कि उनकों परदे से भी ढक दिया गया।

महिलाओं की सामाजिक स्थिति में साथ साथ आर्थिक स्थिति भी निम्न स्तर की थी।

सामाजिक पिछड़ेपन से स्त्रियों की स्थिति में एवं शिक्षा में भारी गिरावट आ गयी। केवल कुछ सम्भ्रानत घरानों की स्त्रियों के कुछ एक उदाहरण पढ़े–लिखे होने के मिलते हैं वह भी घर पर शिक्षा की व्यवस्था करने के उपरान्त।

अंग्रेजी शासन काल में कुछ महिलाओं को विद्यालय खुलने के उपरान्त जरूर पढ़ने लिखने का अवसर प्राप्त हुआ जिनमें मुख्य भूमिका भारत में चलने वाले सामाजिक आन्दोलनों के प्रणेताओं जैसे राजाराम मोहन राय, ईश्वर चन्द विद्यासागर, गोपाल कृष्णा गोखले डी0वी0कार्वे आदि की रही। जिन्होंने न केवल सामाजिक बुराईयों के विरूद्ध आंदोलन चलाए बल्कि नारी शिक्षा एवं नारी के मान–सम्मान को बढाने का प्रयास भारत देश 1947 में आजाद हुआ तथा 1950 में भारत को संविधान प्राप्त हुआ और भारतीय संविधान में कानूनी रूप से सभी को समानता के धरातल पर लाकर खडा कर दिया जिसे संविधान में अनु0 (14–18) के समानता के अधिकार में दिया गया है। भारत जिसे संविधान में प्रत्येक व्यक्ति अब स्वतंत्र रूप से शिक्षा ग्रहण कर व्यवसाय का चुनाव कर सकता है, लेकिन कानूनी पहल होने के उपरान्त भी भारत की सामाजिक व्यवस्था इन कानूनी पहलुओं पर प्रभावी रहती है।

महिला विकास का सम्बन्ध प्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रीय विकास के साथ है। भारत का सवंधिान सर्वाधिक प्रगतिशील संविधानों में से एक और महिलाओं के विकास के लिए देश में बडी संख्या में योजनाएं और कार्यक्रम शुरू किये गये हैं। हमारे यहां विकास के किसी आदर्श की नकल नही की गयी है बल्कि हाल ही के वर्षों में महिलाओं के विकास के अंतर्गत लिंग सम्बन्धी पक्षपात दूर करते हुए महिलाओं को विकास के समान अवसर प्रदान करना। महिलाओं को अधिकार प्रदान करना और उनमें आत्मनिर्भरता लाने के उपायों पर बल दिया गया है।

भारत सरकार ने 1976 में महिलाओं के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना तैयार की जो महिलाओं के विकास संबंधी संयुक्त राष्ट्र की अन्तर्राष्ट्रीय कार्य योजना के दिशा–निर्देशों के अनुरूप थी और उसमें महिलाओं के रोजगार, शिक्षा तथा स्वास्थ्य पर बल दिया गया। महिलाओं से सम्बद्ध राष्ट्रीय परिदृश्य योजना (1988) तैयार की गयी जिसका लक्ष्य महिलाओं से सम्बद्ध मुद्दों की राजनीति और कार्यक्रमों को मुख्य धारा से जोड़ना और महिलाओं को पंचायतों से लेकर संसद तक निर्णय करने की प्रक्रिया में कम से कम एक तिहाई हिस्सेदारी प्रदान करना था। महिलाओं के विकास की नीति तीन पक्षीय होनी चाहिए।

उच्च शिक्षा प्राप्त करने में महिलाओं का प्रतिशत बढ़ा है, परन्तु बहुत ही धीमी गति से। ब्रिटिश राज में स्त्री शिक्षा का प्रतिशत केवल 2–6 प्रतिशत था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यह निम्न प्रकार से रहा :–

क्र.सं.	**जनगणना का वर्ष**	**प्रतिशत**
1	1961	15.3
2	1981	28.5
3	2011	65.46

परन्तु इसमें महिला उच्च शिक्षा प्राप्ति का प्रतिशत बहुत ही कम है। (19.6 प्रतिशत) और ग्रामीण महिला उच्च शिक्षा का प्रतिशत हो और भी कम है।

यह सार्वभौम स्वीकार्य तथ्य है कि महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षा और विकास के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध है। महिलाओं को शिक्षा और अधिकार दिये बिना कोई समाज खुशहाल नहीं हो सकता। व्यक्ति, परिवार, समुदाय और राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विकास में महिलाओं की शिक्षा एवं साक्षरता का महतव सभी जगह स्वीकार किया गया है। पिछले एक दशक में एक बड़ा परिवर्तन यह हुआ है कि महिलाओं के लिए समानता हासिल करने के लिये जारी संघर्ष के केन्द्र में महिलाओं की शिक्षा को मान्यता प्रदान की गयी। सन् 2000 तक सबको साक्षर बनाने अर्थात सार्वभौमिक साक्षरता का लक्ष्य हासिल करने का नारा दिया गया है।

आजादी के बाद भारत ने शिक्षा के क्षेत्र में जो तरक्की की है, वह अभूतपूर्व है। भारत के इतिहास में पहली बार राष्ट्रीय शिक्षा नीति अपनायी है। उसमें इन वर्गो खासकर महिलाओं को समान अवसर देने पर बल दिया गया है, जिन्हें अभी तक समानता नहीं मिल पायी थी। शिक्षा सम्बन्धी कार्य योजना (1992) में महिलाओं को समानता भागीदारी, और आधिकार देने का सर्वोच्च प्राथमिकता दी गयी और इसमें शिक्षा के विभिन्न स्वरों से सम्बद्ध लगभग सभी क्षेत्रों और पहलुओं को शामिल किया गया।

शिक्षा से कोई भी महिला अधिक जागरूक, अधिक श्रेष्ठ और अधिक आत्म विश्वासी बन सकती है, इससे परिवार और समुदाय में उसका महतव बढ़ जाता है।

1981 से 1991 के दशक में पुरूष साक्षरता की बजाए महिला साक्षरता की दर अधिक तेजी से बढ़ी है। 60 प्रतिशत से अधिक महिलाएं अभी निरक्षर है। महिला साक्षरता में ग्रामीण–शहरी का अनराल बढ़ा है। अगर साक्षरता के आंकडों पर नजर डालें तो पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में 80 प्रतिशत महिलाएं निरक्षर हैं और केवल 2 प्रतिशत ऐसी हैं जो मैट्रिक से अधिक पढ़ी हैं। ग्रामीण लड़कियां देर से स्कूल शिक्षा प्रारम्भ करती हैं और बीच में ही छोड़ देती हैं यह बड़ी महतवपूर्ण बात है कि भारत के सर्वाधिक आबादी वाले राज्य उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान और बिहार सर्वाधिक पिछड़े राज्यों के वर्ग में आते हैं। केरल इस मामले में अपने आप में एक जीता जागता उदाहरण है, जहां महिलाओं की साक्षरता दर (87 प्रतिशत) अधिक है। जिसमें ग्रामीण महिला शिक्षा का भी एक अच्छा प्रतिशत है।

परिवार के सदस्यों का सामाजिक स्तर उन्नत करने में स्त्री शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है, अनुसंधान अध्ययनों से पता चलता है कि महिलाएँ चाहे वह शहरी हो अथवा ग्रामीण उनकी शिक्षा का समूचे परिवार के सामाजिक स्तर के सुधार पर रचनात्मक असर पड़ता है।

आर्थिक गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी एक सार्वभौमिक अवधारणा है। 19वी शताब्दी के दौरान समाज में यह स्वीकार नहीं था कि नारी घर से बाहर जाकर परिवारके लिए रोटी कमाएं किन्तु निरन्तर बढ़ते आर्थिक दबाव और जीवन खर्च में बढ़ोत्तरी के कारण, धीरे – धीरे ये प्रतिबन्ध शिथिल होते गये। ग्रामीण महिलाओं को अंसगठित क्षेत्र जैसे कृषि जैसे

कृषि, वानिकी, मवेशी, मदली पालन, खादी और ग्रामद्योग हथकरघा, घरेलू कार्य आदि में ही अधिक काम मिलता है। कृषि के क्षेत्र में ग्रामीण महिलाएं ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ग्रामीण श्रम में उनकी 50 प्रतिशत भागीदारी है। ग्रामीण महिलाओं के श्रम का एक बड़ा हिस्सा ऐसा है जिसकी गणना मुद्रा के रूप में नहीं की जा सकती है।

आज महिलाएं शहरी अथवा ग्रामीण उच्च शिक्षा प्राप्ति के लक्ष्य की ओर अग्रसर है, शहरी महिलाओं में उच्च शिक्षा प्रभाव स्पष्ट रूप से उनकी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति पर परिलक्षित होता है, उनकी आर्थिक सामाजिक स्थिति सुदृढ़ हुई है। ग्रामीण महिलाओं के विषय में यू ंतो कई सर्वे रिसर्च किये गये हैं, परन्तु उच्च शिक्षा में ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक आर्थिक जीवन के विभिन्न आयामों पर किस प्रकार प्रभाव डाला है, प्रस्तुत लेख में इसका अध्ययन किया गया है।

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सबसे बड़ा हथियार है। इसके माध्यम से ही महिलाओं का आर्थिक, सामाजिक सशक्तिकरण सम्भव है, महिला आबदी का एक बहुत बड़ा हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है। परिवार एवं समाज की प्रगति का एक बहुत बड़ा आधार महिलाएं ही है। मलिाओं के शिक्षित होने पर ही एक प्रगतिशील समाज का, देश का निर्माण संभव है। ग्रामीण महिलाओं की शिक्षा के विषय में पूर्व में भी कई अध्ययन कार्य हुए हैं, ग्रामीण महिलाओं में विशेषकर युवतियों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने की लगन स्पष्टतः दिखायी देती है, परंतु फिर भी समय–समय पर देखने को मिलता है कि भले ही ग्रामीण महिलाएं उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हो, लेकिन समाज के नियमों का दबाव निरन्तर इन पर बना रहता है, तथा उच्च शिक्षा हासिल कर लेने के बाद भी उन पर समाज के नियमों का परमपरागत रूप से पालन करना अनिवार्य समझा जाता है।

1. ग्रामीण महिलाओं हेतु वर्तमान में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उपलब्ध अवसरों का विश्लेषण करना।
2. ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं के समाजिक एवं आर्थिक विकास के बहुआयामी पहलुओं का अध्ययन एवं उनका विश्लेषण करना।
3. सामाजिक एवं आर्थिक विकास के विभिन्न पहलुओं एवं उच्च शिक्षा के बीच सहसम्बन्ध को ज्ञात करना।

लेख में जनपद मेरठ में महिलाओं पर शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना है।

निष्कर्ष

अध्ययन क्षेत्र में अध्ययन करने के पश्चात निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए है।

1. महिलाओं का भारतीय अर्थव्यवस्था में लगभग 50 प्रतिशत तक का योगदान है। जैसे–जैसे किसी समाज की महिलायें विकास करेगीं उसका सीधा सम्बन्ध समाज के विकास से है।

2. शिक्षा और महिलाओं के विकास के बीच सकारात्मक सम्बन्ध है जैसे–जैसे महिलायें शिक्षित होगी वहाँ के समाज का विकास उतना ही होगा।
3. महिलओं में अपने अधकारो के प्रति जागरूकता जिसका सीधा–सीधा योगदान हर क्षेत्र में देखने को मिलता रहा है।
4. अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त अवलोकन से देखने से पता चला है कि महिलाओं की बढ़ती शिक्षा परिवारों की प्रकृति पर सीधा–सीधा प्रभाव डाल रही है। एकांकी परिवारों की संख्या लगातार बढ़ रही है जिसके पीछे महिलाओं की बढ़ती जागरूकता को प्रभावी माना जा सकता है।
5. महिलाओं की बढ़ती शिक्षा एवं उसके प्रभाव का अध्ययन करने पर पता चलता है महिलायें जितनी आंकड़ो में शिक्षित हुई है दूसरी तरफ समाज उनके विकास में मानसिक रूप से समायोजन के लिए तैयार नही दिख रहा है। वही दूसरी और महिलाओं में शिक्षित होने के पश्चात् शिक्षा के उपयोग का संकट दिखायी देता है।
6. महिलाओं के सर्वागीण विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है जो महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने में सकारात्मक योगदान देती है।

सन्दर्भ

1. सांकृत्यायन राहुल (1943) – *'वोल्गा से गंगा'* – किताब महल, दिल्ली।
2. डा0 अम्बेडकर, बी0आर0 (1936) – *एनहिलेशन ऑफ कास्ट*, नई दिल्ली।
3. आहूजा राम (2005) – *भारतीय सामाजिक व्यवस्था*, रावत प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. सिंह जे.पी. (2011) – समाजशास्त्र – *अवधारणाएं एवं सिद्धान्त*, पी0एच0एल0. लर्निंग प्रा0लि0, नई दिल्ली।
5. वर्मा सवालिया बिहारी (2011) – *ग्रामीण महिलाओं की स्थिति*, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
6. .देसाई नीरा (1997) *वूमेन इन मॉडन इण्डियन*, वोरा एण्ड कम्पनी, बाम्बे।
7. एम.कृष्ण राज (1987) *वूमेन एण्ड सोसायटी एन इण्डिया*, अजन्ता बुक इंटरनेशनल दिल्ली।
8. *देवी राम इन्दिरा वूमेन एजूकेशन इम्पलाइमेंट : फैमिली लिविंग*, ज्ञान पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली।